हिंदी

बालभारती

दूसरी कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया ।
दि. १९.३.२०१९ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी

बालभारती

दूसरी कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

NY3F2G

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा पाठ्यपुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक और प्रत्येक पाठ के अंत में दिए गए Q.R.Code द्वारा पाठ से संबंधित अध्ययन-अध्यापन के लिए दृक-श्राव्य सामग्री भी उपलब्ध होगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१९
दुसरा पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. छाया पाटील – सदस्य
प्रा. अनुया दळवी – सदस्य
डॉ. विजयकुमार रोडे – सदस्य
डॉ. शैला ललवानी – सदस्य
डॉ. अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार
विशेषाधिकारी हिंदी भाषा
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ.संध्या विनय उपासनी
सहायक विशेषाधिकारी हिंदी भाषा
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

निर्मिति :

श्री सच्चितानंद आफळे
मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता
निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी
सहायक निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई–२५

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री भुमेश्वर खुमेश्वर कटरे
श्री जयप्रकाश गरीबदास सूर्यवंशी
श्री ईश्वरदयाल राधेलाल गौतम
श्री अनिलकुमार जगन अंबुले
श्रीमती अलका वर्मा
श्री समीर अशोक जाधव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
डॉ. रजनीकांत पोवार
श्री सुनील कुमार बच्चन यादव
श्री श्यामराव रावले
श्री केशव कातकडे
डॉ. जितेंद्र पांडेय
श्री सुनिल दरेकर
श्रीमती पूजा अलापूरिया
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे

मुखपृष्ठ : राजेंद्र गिरधारी
चित्रांकन : राजेंद्र गिरधारी, मयूरा डफळ
राजेश लवळेकर
अक्षरांकन : भाषा विभाग,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम क्रीमवोव्ह
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/40,000
मुद्रक : M/S. MANAS PUBLICATIONS, AHMEDNAGAR

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, **भारत के लोग,** भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्‌ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्‌धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थी मित्रो !

तुम सबका दूसरी कक्षा में स्वागत है । दूसरी कक्षा की ''हिंदी बालभारती'' पाठ्‌यपुस्तक तुम्हें सौंपते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है ।

पहली कक्षा में तुमने भली-भाँति बोलना, पढ़ना और लिखना सीखा । अब दूसरी कक्षा में इससे आगे बढ़ना है । पहली कक्षा में तुमने संभाषण, वाचन और लेखन किया है, उसे अधिक दृढ़ करना है । आगे बढ़कर नई-नई बातें सीखनी हैं । इसके लिए पाठ्‌यपुस्तक में सुंदर चित्र और चित्रकथाएँ दी गई हैं । सहजता से गाए जाने वाले गीतों तथा कविताओं को सम्मिलित किया गया है । पुस्तक में बोधप्रद पाठ्‌यसामग्री के साथ मनोरंजक कहानियों को भी स्थान दिया गया है । इन कहानियों और कविताओं को पढ़कर, सुनकर तुम्हें आनंद आएगा ।

पुस्तक के चित्र देखो । चित्रों में दर्शाई गई वस्तुओं, पेड़ों, प्राणियों, पक्षियों और मनुष्यों से बातचीत करो, उन्हें समझो । चित्रकथा को समझो और अपनी कक्षा के मित्रों / सहेलियों के बीच उसे साझा करो । सब मिलकर गीत गाओ, पाठ पढ़ो, पढ़ते-पढ़ते समझो । पाठ के नीचे विभिन्न प्रकार की रोचक कृतियाँ दी गई हैं । पाठ को पढ़ते ही पाठ के नीचे दी गई कृतियों के उत्तर प्राप्त हो जाएँगे । इस प्रकार पाठ आसानी से समझ में आएगा । वाचन-लेखन, सीखने में भी मन हरषाएगा ।

पुस्तक में कुछ भाषाई खेल दिए गए हैं । इन खेलों को खेलते-खेलते भाषा को सीखना भाषा का पहला सोपान है । पाठ्‌यपुस्तक में कुछ शब्द-पहेलियों का भी समावेश है । इन पहेलियों के उत्तर बूझो । आस-पास के पशु-पक्षियों की तथा उनके निवास की जानकारी भी तुम्हारे भावजगत को संपन्न करेगी ।

यह ऐसा क्यों है और वह ऐसा क्यों नहीं ? ऐसे प्रश्न तुम्हारे मस्तिष्क में उभरते रहते हैं और तुमको सोचने पर बाध्य करते हैं । इस पाठ्‌यपुस्तक में तुम्हें सोचने-समझने के लिए पर्याप्त अवसर दिए गए हैं । विचार करते-करते आगे बढ़ो एवं स्वयं को जिज्ञासु बनाओ । तुम्हारी कल्पनाओं की उड़ान बहुत ऊँची है । यहाँ तुम्हारी कल्पना शक्ति को पूरा आकाश दिया गया है । कल्पना के सागर में गोता लगाते हुए तुम नई बातों की खोज करो तो आनंद का अनुभव करोगे । इस पुस्तक के कुछ पाठों के अंत में क्यू.आर.कोड दिए गए हैं । क्यू.आर.कोड द्‌वारा प्राप्त जानकारी भी तुम्हें बहुत पसंद आएगी ।

प्यारे बच्चो, इस पाठ्‌यपुस्तक की सभी कृतियाँ कक्षा में ही करनी हैं । क्यों, है न मजे की बात । दूसरी कक्षा में अच्छा सुनना, बोलना (संभाषण), अच्छा पढ़ना और सुंदर लिखना सीखो तो सफलता का मार्ग प्रशस्त बनेगा ही । तुम सबको ढेर सारी शुभकामनाएँ ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : ६ अप्रैल २०१९
भारतीय सौर : १६ चैत्र १९४१ गुड़ीपाडवा

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति : दूसरी कक्षा

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
सभी विद्यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए, ताकि उन्हें – • अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की अत्यधिक स्वतंत्रता और अवसर हों । • हिंदी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों । • विद्यार्थियों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषा/भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के विद्यार्थी कक्षा में हैं ।) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों । इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और शब्द भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर विद्यार्थियों को मिल सकेंगे । • 'अध्ययन का कोना' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषाएँ, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री उपलब्ध हों । • चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर तरह-तरह की कहानियों, कविताओं को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों । • विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों । जैसे – किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, पात्र के संबंध में अपनी पसंद या नापसंद के बारे में बता पाना आदि । • कहानी, कविता आदि को बोलकर, पढ़कर सुनाने के अवसर हों और उसपर बातचीत करने के अवसर हों । • सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से कागज पर उतारने के अवसर हों । ये चित्र भी हो सकते हैं, शब्द भी और वाक्य भी । • विद्यार्थी अक्षरों की आकृति को बनाने में अपेक्षाकृत सुघड़ता का प्रदर्शन करते हैं । इसे कक्षा में प्रोत्साहित किया जाए । • विद्यार्थियों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए । • संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों ।	**विद्यार्थी –** 02.02.01 विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा पाठशाला की भाषा का प्रयोग करते हुए बातचीत करते हैं । जैसे – जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि । 02.02.02 कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं । 02.02.03 देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं । 02.02.04 अपने निजी जीवन और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनाई जा रही सामग्री जैसे – कविता, कहानी आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं । 02.02.05 भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मजा लेते हुए लय और तुकवाले शब्द बनाते हैं । जैसे – इधर-उधर । 02.02.06 अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/सुनाते हैं । 02.02.07 अपने स्तर और पसंद के अनुसार कहानी, कविता, चित्र, आदि को आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं । 02.02.08 चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं का अवलोकन करते हैं । 02.02.09 चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं । 02.02.10 परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं । जैसे – चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर-ध्वनि संबंध का प्रयोग करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का प्रयोग करते हुए अनुमान लगाना । 02.02.11 प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं । जैसे – 'मेरा नाम मीरा है ।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं ?/'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन-कौन से अक्षर हैं ? 02.02.12 हिंदी वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं । 02.02.13 पाठशाला के बाहर और पाठशाला के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की पुस्तकों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं । 02.02.14 स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत चित्रों, आड़ी तिरछी रेखाओं, अक्षर-आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व-वर्तनी का उपयोग और स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) करते हैं । 02.02.15 सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह-तरह से चित्रों/शब्दों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं । 02.02.16 अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि को आगे बढ़ाते हैं ।

शिक्षकों/अभिभावकों के सूचनार्थ ....

प्रिय शिक्षक/अभिभावक !

दूसरी कक्षा, हिंदी बालभारती की यह पाठ्‌यपुस्तक विद्‌यार्थियों के पूर्वज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों एवं मनोरंजक विषयों से सुसज्जित आपके सम्मुख प्रस्तुत है । इस पुस्तक में विद्‌यार्थियों के पूर्वानुभव, घर-परिवार, परिसर के विषयों को आधार बनाकर श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन के भाषिक मूल कौशलों के साथ आकलन, निरीक्षण, कृति, उपक्रम पर विशेष बल दिया गया है । पाठ्‌यपुस्तक में समाहित किए गए गीत, बाल कविता, लोरी, संवाद, कहानी, आत्मकथा, निबंध आदि बहुत ही रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत किए गए हैं ।

पाठ्‌यपुस्तक की संरचना 'मूर्त से अमूर्त', 'स्थूल से सूक्ष्म', 'सरल से कठिन' एवं 'ज्ञात से अज्ञात' सूत्र को आधार बनाकर की गई है । क्रमबद्‌धता एवं क्रमिक विकास इस पुस्तक की विशेषता है । पूर्वानुभव से शुरुआत करके सुनो और बताओ; देखो, समझो और बताओ; सुनो, दोहराओ और गाओ, देखो और बताओ, पढ़ो आदि कृतियों को क्रमशः प्रमुख स्थान दिया गया है । शिक्षकों/अभिभावकों एवं विद्‌यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर पूरी पुस्तक को चार इकाइयों में बाँटा गया है । पहली से चौथी इकाई तक श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन कौशलों को महत्त्व दिया गया है । श्रवण, भाषण-संभाषण के सभी विषय विद्‌यार्थियों के अनुभव जगत से ही जुड़े हुए हैं । अतः इससे विद्‌यार्थियों के इन कौशलों के विकास में अधिक आसानी होगी ।

अध्ययन-अध्यापन के पहले निम्न मुद्‌दों पर विशेष ध्यान दें :

— सर्वप्रथम पूरी पुस्तक का गंभीरता से अध्ययन कर लें ।

— पाठ्‌यपुस्तक में भाषाई क्षमताओं श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, खोजो एवं बहुत अच्छा (थंब) आदि के लिए अलग-अलग आइकॉन (संकेत चित्र) दिए गए हैं । इन सभी 'आइकॉन' प्रतीकों को अच्छी तरह समझ लें और विद्‌यार्थियों को इन 'आइकॉन' (प्रतीकों) के अर्थ अच्छी तरह समझा दें । जिस पाठ में जो आइकॉन दिए गए हैं, वहाँ उस कृति को प्रमुखता से महत्त्व दिया जाना आवश्यक है । तदनुसार अभ्यास कराएँ ।

— प्रत्येक पाठ के प्रारंभ में दाहिनी ओर रेखांकित चित्र दिए गए हैं । विद्‌यार्थियों को इन चित्रों में रंग भरने के लिए प्रेरित करें ।

— प्रत्येक इकाई की शुरुआत का विषय विद्‌यार्थियों के पूर्वानुभव पर आधारित है । उनके पूर्वज्ञान को आधार बनाकर नये ज्ञान, सूचनाओं को विद्‌यार्थियों तक पहुँचाना है । पहली इकाई में 'हम' में प्रत्येक विद्‌यार्थी को अपना नाम और अपने परिवार का परिचय, दूसरी इकाई में 'ऋतुएँ' में ऋतुओं का ज्ञान, तीसरी इकाई में 'वनभोजन' के माध्यम से सह संबंध बढ़ाने का उपक्रम, चौथी इकाई में 'मेरा निवास' में प्राणियों के निवास स्थानों के नामों का परिचय कराया गया है । इनके माध्यम से विद्‌यार्थियों में स्वच्छता, प्रेम, सच्चाई, मिलकर खेलने, एकता एवं सदा प्रसन्न रहने के गुणों को भी अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है । आपसे यह अपेक्षा है कि विद्‌यार्थियों को इन्हें जानने, आत्मसात करने एवं अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करें ।

— प्रत्येक इकाई में चित्रवाचन/चित्रकथा दी गई है । विद्‌यार्थियों को चित्रों के निरीक्षण का भरपूर अवसर दें । चित्रों पर चर्चा कराएँ । उन्हें प्रश्न पूछने के अवसर दें । आप विद्‌यार्थियों से प्रश्न पूछें । चित्रों में आए वाक्य पढ़कर सुनाएँ । उनसे दोहरवाएँ । यहाँ दी गई प्रत्येक कृति करें/करवाएँ । घर, परिसर में आवश्यकतानुसार ये कृतियाँ करने के लिए प्रेरित करें । चित्र देखकर विद्‌यार्थियों के मन में आए भाव/विचार व्यक्त करने के अवसर प्रदान करें ।

— प्रत्येक इकाई में काव्य विधा के अंतर्गत श्रवण कौशल के विकास के लिए सुनो और दोहराओ; सुनो, दोहराओ और गाओ; पढ़ो और गाओ; पढ़ो, गाओ और बताओ अंतर्गत हास्य कविता, बालगीत, कविता, लोरी आदि दी गई हैं । इनको पहले आप उचित स्वर, लय-ताल, आरोह-अवरोह, हाव-भाव एवं अभिनय के साथ विद्‌यार्थियों को सुनाएँ । कई बार हाव-भाव एवं अभिनय के साथ दो-दो पंक्तियाँ बोलकर विद्‌यार्थियों से दोहरवाएँ । विद्‌यार्थियों को क्रमशः व्यक्तिगत, गुट में एवं सामूहिक रूप में दोहराने, बोलने, गाने के अवसर प्रदान करें।

— श्रवण, भाषण-संभाषण कौशल के विकास के लिए कहानी, चित्रकथा भी दी गई हैं । इनमें दिए गए चित्रों का विद्‌यार्थियों से निरीक्षण कराएँ । तदुपरांत आप स्वयं उचित हाव-भाव उच्चारण के साथ कहानी कई अंशों में विद्‌यार्थियों को सुनाएँ । विद्‌यार्थियों को कहानी दोहराने या बताने के लिए प्रेरित करें । कहानी पर आधारित छोटे-छोटे प्रश्न पूछें । प्रश्न पूछकर चित्रों पर अँगुली रखने के लिए कहें । चित्रों में आए प्राणियों, पेड़-पौधों, वस्तुओं के बारे में बोलने के लिए प्रेरित करें । आप सुनिश्चित करें कि प्रत्येक विद्‌यार्थी ने कहानी समझते हुए सुनी है ।

— पाठ्यपुस्तक में दिए गए संवादों को उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ सुनाएँ । पाठ में आए कुछ ऐसे प्रसंगों की निर्मिति करें जिससे विद्‌यार्थियों को बोलने के अवसर प्राप्त हों । दो विद्‌यार्थियों के बीच किसी संदर्भ/प्रसंग पर संवाद करवाएँ और प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें ।

— पाठों में मीरा और कबीर की सूचनाओं एवं कृतियों का अनुपालन कराएँ ।

— वर्ण, मात्रा, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर आदि का श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन द्‌वारा पुनरावर्तन किया गया है । विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ, चर्चा करें, नाम पूछें । व्यक्तिगत उत्तर प्राप्त करें । नाम बोलकर उस पर अँगुली रखवाएँ । स्पष्ट उच्चारण के साथ विद्‌यार्थियों को सुनाएँ और उनसे बार-बार दोहरवाएँ ।

– पहली इकाई 'घर' पाठ में वर्णमाला, दूसरी इकाई के 'किसान एक अन्नदाता' पाठ में मात्रा, तीसरी इकाई के 'दादी अम्मा की रसोई' पाठ में संयुक्ताक्षर, चौथी इकाई के 'शब्दों का संजाल' पाठ में पंचमाक्षर पढ़ने और लिखने का दृढ़ीकरण करवाया गया है ।

– पहली इकाई में 'सिग्नल' में विरामचिह्न, दूसरी इकाई में 'जोकर' के माध्यम से शब्दयुग्म, तीसरी इकाई में 'ऊँट' के माध्यम से गिनती, चौथी इकाई में 'समान-असमान' के माध्यम से समानार्थी-विरुद्‌धार्थी शब्दों को पहचानने के लिए दिया गया है ।

– पहली इकाई में 'परी', दूसरी इकाई में 'बंदनवार', तीसरी इकाई की कृति में 'बधाई पत्र', चौथी इकाई की कृति में 'छाप' द्‌वारा विद्‌यार्थियों को रोचक मनोरंजक कृतियाँ दी गई हैं ।

– प्रत्येक पाठ के स्वाध्याय में श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन इन क्षमताओं के अनुसार प्रश्न दिए गए हैं । सुनो, बोलो, पढ़ो, लिखो इसी प्रकार विद्‌यार्थियों से प्रश्न हल करवाने आवश्यक है ।

– पहली इकाई में पुनरावर्तन-१, दूसरी इकाई में पुनरावर्तन-२, तीसरी इकाई में पुनरावर्तन-३ और चौथी इकाई में पुनरावर्तन-४ और ५ की कृतियाँ ज्ञान में वृद्‌धि के लिए दी गई हैं ।

– पाठ्‌यपुस्तक के स्वाध्याय में दिए गए श्रवण के प्रश्नों से संबंधित विषय सामग्री सुनाएँ और विद्‌यार्थियों को वाचन के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ ।

– तीसरी, चौथी इकाइयों में बालगीत, कविता, चित्रकथा, कहानी, संवाद आदि पढ़ने और आवश्यकतानुसार लिखने के लिए दिए गए हैं । इनके पढ़ने, बताने, चर्चा करने, निरीक्षण करने, लिखने आदि का सूचनानुसार अभ्यास एवं दृढ़ीकरण आवश्यक हैं । कविता, कहानी, संवाद आदि के वाचन में उचित उच्चारण, हावभाव, आरोह-अवरोह, लय-ताल, अभिनय आदि का योग्य स्थान पर अवश्य उपयोग करें ।

– पाठ्‌यपुस्तक में स्वाध्याय एवं पुनरावर्तन के अंतर्गत अनेक कृतियाँ दी गई हैं । इन कृतियों का बार-बार अभ्यास अपेक्षित है ।

– पाठ्‌यपुस्तक में अनुलेखन, श्रुतलेखन, कहानी लेखन आदि का क्रमश: सूचनानुसार अभ्यास कराएँ ।

– पाठों के माध्यम से अनेक अच्छी आदतें, मूल्यों, जीवन कौशलों एवं मूलभूत तत्त्वों का समावेश किया गया है । यथास्थान इनको महत्त्व दें । इनके दृढ़ीकरण हेतु आवश्यक प्रसंगों का निर्माण करके विद्‌यार्थियों द्‌वारा अभ्यास कराना अत्यावश्यक है ।

पाठ्‌यसामग्री का मूल्यमापन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है । पाठ्‌यपुस्तक में सन्निहित सभी कौशलों/क्षमताओं, कृतियों, उपक्रमों का समान, सतत एवं सर्वंकष मूल्यमापन अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में इस पुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए विद्‌यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति आत्मीयता जागृत करने में समर्पक सहयोग देंगे ।

***

* विषयसूची *

पहली इकाई

* हम (पूर्वानुभव)
१. अभिवादन
२. पानी दे
३. सच्चे मित्र
४. घर
५. सिग्नल
६. मेरी बगिया
७. चंदामामा
८. परी
* पुनरावर्तन-१

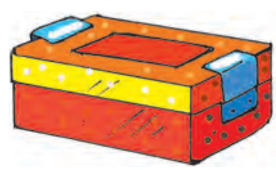

दूसरी इकाई

* ऋतुएँ (पूर्वानुभव)
१. हमारे त्योहार
२. इंद्रधनुष
३. बातूनी कछुआ
४. किसान एक अन्नदाता
५. जोकर
६. जल्दबाजी
७. इधर-उधर
८. बंदनवार
* पुनरावर्तन-२

तीसरी इकाई

* वनभोज (पूर्वानुभव)
१. हमें पहचानो
२. बेमिसाल
३. ऊँट
४. मैं कौन ?
५. दादी अम्मा की रसोई
६. बरगद
७. परोपकार का फल
८. सो जा, सो जा नन्ही मुनिया
९. बधाई पत्र
* पुनरावर्तन-३

चौथी इकाई

* मेरा निवास (पूर्वानुभव)
१. सार्वजनिक स्थान
२. मेरी खुशियाँ
३. समान-असमान
४. आओ, मिलकर हँसें
५. शब्दों का संजाल
६. तिरंगे का सम्मान
७. जंगल में मंगल
८. बच्चो बनो महान
९. छाप
* पुनरावर्तन-४
* पुनरावर्तन-५